Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 9 | Issue : 9 | September 2023

'ठीकरे की मंगनी' में – महरूख की अस्मिता

डo कला टी वी

असिस्टेंट प्रोफेसर, एन एस एस हिन्दू कॉलेज, चंगनाचेर्री, केरला

INTRODUCTAON

आधुनिक नारी बोध को प्रकट करनेवाला हिंदी महिला लेखन समसामयिक जीवन की जटिल अनुभूतियों और साहित्यक कृत्यों का प्रतिबिम्ब है। हिंदी की सजग और सक्रिय कथाकार श्रीमती नासिरा शर्मा एक ऐसी ही खासियत है जो वर्षों से पश्चिम एशियाई समाज की समस्यायों व आम इंसानों के दुःख दर्द पर लगातार लिखती आयी है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में नारी स्वतंत्रता की अवधारणा सशक्त मात्रा में है। वे अपने रचनात्मक जीवन के प्रारंभ से ही नारी जीवन की समस्याओं के प्रति संवेदनशील रही है। उनकी रचनाओं में केवल भारतीय नारी ही नहीं विदेशी नारियों के उलझनों का सूक्ष्म चित्रण भी अंकित किया गया है।

नारी अस्मिता पर प्रकाश डालनेवाला नासिरा जी का उपन्यास है 'ठीकरे की मंगनी'। 'ठीकरे की मंगनी' की महरुख एक सशक्त स्त्री चरित्र है जो मजबूत इरादोंवाली, संघर्षशील नारी है। उसका पूरा जीवन पुरुष सत्ताक नज़रिये के प्रति असहमति और विरोध का पर्याय है। रुढिग्रस्त भारतीय मुस्लिम परिवेश में स्त्री की आत्मान्वेषित स्वचेतना को सबल बनाकर, स्त्री होने की विशिष्ट मान्यताओं और संस्कारों से पग–पग पर मुठ भेड करते हुए, कड़वें जीवनानुभवों के प्रहरात्मक अवरोधों से अविचलित होकर, उचित–अनुचित का स्वयं के विवेक से अन्तर करते हुए उन्हें अपनाती–छोड़ती, गहरी प्रश्नाकुलता के साथ महरुख की जिन्दगी बीती है। बिना किसी बड़बोलेपन के, बिना गर्जन–तर्जन के तथा खामोशी और धैर्य के साथ अत्यंत संतुलित रूप से वह अपने जीवन का सफर तय करती है जिसमें किसी भी मर्यादावादी सोच को हस्ताक्षेप की अनुमति नहीं। वह किसी पुरुष के हाथों का खिलौना नहीं बनती और न अपनी सुरक्षा के लिए उसके मुँह की ओर ताकती है। आम स्त्री की तरह महरुख भी अपना दिल मंगेतर रफत के प्रति समर्पित करती है और उसके साथ जीवन के अनेक सपने बुनती है। पर रफत उसका इस्तेमाल अपने हक में करता है। महरुख जब रफत भाई के रंग में पूरी तरह से अपने को रंगने में मसरुफ थी, उस वक्त खबर मिली कि रफत भाई अमेरिका में किसी और के साथ लिविंग टुगेदर' जैसी ज़िन्दगी गुजार रहे हैं। "यह सुनकर महरुख को पूरा सौर मंडल दर–हम–बरहम होता नज़र आया था। टूटते–बिखरते ग्रहों व उपग्रहों के बीच वह सिर्फ इतना कह पाई थी, नहीं नहीं, यह झूठ है, सरासर झूठ"[1]। महरुख ने अपनी जिन्दगी को नया मोड दिया। वह निराश व दुःखी होकर न मायिका लौटी बल्कि रफत की इच्छा के विरुद्ध दिल्ली की पढ़ाई छोड़कर एक गाँव में टीचर की नौकरी करने का निश्चय करती है। जिस गाँव में वह नौकरी करती है उस गाँव के मुसलमान के घरों के लिए महरुख एक पहेली बनती है और बाकी लोगों के लिए एक राज।

महरुख रफत के अन्दर रहनेवाली पुरुष की अवसरवादी और सुविधावादी प्रवृत्ति को पहचानती है। विदेश से वापस आकर जब रफत महरुख से शादी की बात करते हैं तो वह सख्त इनकार करती है और उनसे कहती है कि "आपकी शादी की बात सुनकर मैं टूटी थी, बिखरी थी और उस गम की दीवानगी में मैं मरते–मरते बची थी, फिर मेरी जिन्दगी का सबसे खूबसूरत लम्हा सबसे बदसूरत और डरावना होकर मेरे सामने खड़ा हो गया था। जिसके बारे में मैं ने सोचा नहीं था और मेरे अन्दर की और उसी लम्हे मर गई थी, रफत भाई।"[2] अपने स्वार्थ के लिए पल–पल रंग बदलानेवाला पुरुष विश्वसनीय कैसे हो सकता है ? महरुख बिलकुल ठीक समझती है कि –"वह रफत भाई के दिल व दिमाग में कभी नहीं थी। जब उसकी समझ में वह रिश्ते के नाम पर एक पोस्टर थी, एक नारा थी, जिसे रफ़त भाई समाज की दीवार पर चिपका कर अपनी पहचान का झण्डा ऊंचा रखना चाहते थे, वरना वह महरुख का हक किसी और औरत को क्यों दे बैठते? "[3] महरुख उन औरतों में से नहीं जो ठुकाराये जाने के बाद भी फिर से पुचकारे जाने पर मर्द के पहलू में ध।प से आ गिरती है। रफत की वापसी, उनका पछतावा, उनकी क्षमायाचना से भी महरूख विचलित नहीं होती। वह रफत से साफ–साफ कहती है कि "मैं जगह, चीज या मकान नहीं थी रफत भाई, जो वैसी की वैसी ही रहती। मैं इन्सान थी, कमज़ोरियों का पुतल। मैं ने आपको जिस भरोसे से भेजा था, आप भी वैसे कहां रह पाए? कुछ चीजें कितनी बेआवाज टूटती हैं। मैं बेआवाज़ टूटी थी, किरच किरच होकर बिखरी थी। बड़ी मुश्किल से अपने को चुना है, समेटा है, जोड़ा है, तब कहीं जीने का काबिल हुई हूँ। मुझसे अब मेरी यह ज़िन्दगी वापस मत छीनिए।"[4] महरूख में पुरुष के बिना जीने की ताकत और दृढ़ आत्म विश्वास पैदा होता है। अब उसके मन में शादी के सुनहरे स्व।न नहीं है। उसकी जिन्दगी का तो लक्ष्य ही बदल गया। उसके जीवन में मंगेतर रफत का कोई स्थान, कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता है। उसका मन अब रफत जैसे पुरुष के स्थान पर दीन–दुखी गरीब व अभावग्रस्त गाँव के लोगों के दर्द से आहत हो। वह उनके कष्टों को मिटाने में, उनकी समस्याओं के समाधान में लग जाती है। हालत ने महरुख को पूर्ण रूप से बदल दिया। अब उसका जीवन उसका अपना ही है। वह कहती है– "अब मेरे पास समझ है, में अपना भला–बुरा खुद समझ सकती हूँ, ठोस जमीन पर ठोस जिन्दगी जीना चाहती हूँ, मेरी ज़िन्दगी पर सिर्फ मेरा हक है।"[5] अपनी ज़िन्दगी के सभी निर्णयों को लेने का अधिकार अपने में मानकर वह ठोस जमीन पर ठोस ज़िन्दगी जीने का निर्णय लेती है।

यहाँ महरुख एक वजूद की तरह दिखाई देती है। वह यहाँ एक व्यक्ति है जो पुरुष की भाँति अपनी इच्छा–अनिच्छा को प्रकट ही नहीं करती बल्कि उसका पालन भी कर सकती है। नारी के ऊपर किये गये अत्याचार के विरुद्ध यह आवाज़ उठाती है– "मैं ने आपका क्या बिगाड़ा था, जो अपने मेरे मासूम बेगुनाह जज्बात को रौंदा, कुचला और मुझे अकेला छोड़ दिया। में हालात से लड़ते–लड़ते दम तोड़ गई थी। मुझे मेरी ही नजरों में जलील कर, आपने मुझे ख्वाहिशों के जाल में फंसा कर मेरे अन्दर की महरुख के परचे उड़ा दिये थे। मैं ने कितना सहा, कितना टूटी। मेरा सुकून और सब कुछ मुझसे दूर चला गया था। आपकी ख़्वाहिशों के पुल से गुजरती हुई मैं जिस हाल को पहुंची थी, वहाँ सिर्फ दलदल थी... सिर्फ दलदल! मौत और ज़िन्दगी के बीच में लटकती वह मैं थी। ऊपर से आप यह इलज़ाम दे रहे हैं कि में सब बना–बनाया बिगाड़ रही हूँ।"[6] महरुख के हृदय से निकले विद्रोह के इन शब्दों में पुरुष द्वारा चिर शोषित और पीडित नारी का दर्द भरा हुआ है।

रफत दुबारा महरुख के सामने विवाह का प्रस्ताव रखने पर वह साफ शब्दों में कहती है कि रिश्ते में यदि आत्मीयता, विश्वास और समर्पण की गर्मी न हो तो ऐसा रिश्ता बेकार है। वह स्पष्ट करती है कि "बिना रुह का जिस्म मुर्दा होता है और बिना अहसास का रिश्ता ठण्डा समझौता। जहाँ सब कुछ होगा, मगर जान नहीं होगी, जिन्दगी नहीं होगी। ऐसी मुर्दा के साथ आप भी जिन्दगी गुज़रना नहीं चाहेंगे और मैं तो... अपनी मज़बूरी का इजहार करते हुए महरुख बोली।"[7] वह पुरुष के पैरों पर गिरकर अपनी सुरक्षा की भीख मांगती या गिड़गिड़ाने वाली स्त्री नहीं है। उसमें एक इंसान का आत्मविश्वास मौजूद है जो ठोस ज़िन्दगी जीने का इच्छुक भी है। वह अपना जीवन अकेला जीने का निर्णय ले लेती है। यहाँ भी पुरुष में अन्दरलीन शंका दृष्टि रफत के द्वारा स्पष्ट है कि "क्या महरुख की जिन्दगी में मेरे अलावा कोई और है? "[8] पुरुष सदैव अपने को ऊँचा मानते हैं या अपनी गलती दूसरों के सामने मानने को तैयार नहीं। इसलिए रफत पूछता है कि "मैं ने तो सब कुछ उसके लिए किया है, फिर यह कैसा शिकवा? रात–दिन ओवर टाइम काम करके पाई–पाई बचाकर आखिर किसके लिए लाया हूँ मैं? मुझमें आखिर गलती कहाँ पर हुई है? महरुख मुझे क्यों नहीं

Copyright© 2023, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

समझ पाई या मेरे समझने में कोई कसर रह गई है ? "[८] यहाँ की सारी गलतियों का उत्तरदायित्व रफत का है लेकिन यहाँ रफत गलती को हमारी गलती समझकर महरुख को माफ देना चाहता है– "देखो महरुख, कहीं न कहीं पर हम दोनों हालात के शिकार हुए हैं। अनजाने में या मजबूरी में, बहरहाल जो हुआ उस पर खाफ डालते हैं, क्योंकि हमारी गलतियों का हिसाब बराबर हो गया है और हम एक ज़मीन पर खड़े होकर नई जिन्दगी शुरू कर सकते हैं तुमने मुझे माफ किया या नहीं, मगर मैं ने माफ किया, महरुख। "[९०] पुरुषवर्ग का अवसरवादी स्वभाव रफत के चरित्र में मौजूद है लेकिन महरुख एक चंचल ह्रदयवाली नारी नहीं है। महरुख अपने आत्मबल पर अटल रहकर रफत को उत्तर देते हुए कहती है कि– "आपने मुझे माफ़कर दिया, मगर मैं तो अपने को नहीं माफ़ कर पाई, रफ़त भाई। आपकी ज़रूरतों और मांगों के हिसाब से अब मैं अपने को बदल नहीं पाऊंगी। आपको बहुत आगे जाना है और मुझे एक जगह ठहर कर बहुत लोगों के साथ चलना है। हमारी जिन्दगी के लक्ष्य और उद्देश्य एक नदी के दो किनारे हैं। "[९१] वास्तव में महरुख में विपरीत सामाजिक व घरेलु परिस्थितियों में अपने को सृजनात्मक व बौद्धिक धरातल पर तराशने की क्षमता है।

महरुख की अस्मिता सिर्फ पुरुष विरोध पर टिकी नहीं है, अर्थात उसके मन में मर्द के लिए नफ़रत भी नहीं है। वह मानती है "औरत की जिन्दगी के सारे करीबी व जज्बात रिश्ते मर्द से ही होते हैं। बाप, भाई, शौहर, महबूब, बेटा जैसी अहमियत को नकार कर औरत कहाँ जाएगी?" [९२] लेकिन रिश्ता बराबरी की ज़मीन पर न बना हो तो उसमें हमेशा परेशानी होती है। मर्द बहुत बुरे होते हैं, उनसे किसी तरह की हमदर्दी नहीं करनी चाहिए ऐसा कोई विचार उसमें नहीं है। वह अमृता को समझाती हुई कहती है कि "मर्द न हमारा दुश्मन है, न हरीफ वह हमारी तरह का इनसान है। मानती है औरतों की तकलीफें बेशुमार हैं, मगर मर्द कब अपनी उलझन से आजाद है? उसको सबसे बड़ी उलझन तो आज की बदलती ओरत है जिसे वह समझ नहीं पा रहा है। मर्दों को हम जज्बाती नजर से न देखकर उन्हें व्यावहारिक तौर पर देखें तो शायद हम उनकी कुण्ठाओं की गिरहें खोल सके और उन्हें बहुत कुछ समझा सके।"[९३] महरूख की स्पष्ट मान्यता है। "हमारी लडाई अपनों से संघर्ष की लड़ाई है, यानी भूमिगत, अपने अन्दर अपने से समझने और मज़बूत बनाने की । हमें मर्द नहीं बनना है, नहीं मर्द को औरत बनाना है। एक दूसरे का लबादा पहनने की यह ललक ही मुसीबत बन रही है। जरूरत है अपनी– अपनी जगह खड़े होकर अपने आप को समझने और दूसरे को समझाने की। इनसान को ज़िन्दगी सिर्फ एक बार मिलती है और उसे सिर्फ एक के लिए खत्म करना नासमझी ही नहीं जुर्म भी है।"[९४] यहाँ नासिरा शर्मा महरुख के द्वारा औरतों को यह चेतावनी देती है कि हमें पुरुष वर्ग को या पति को यदि जवाब देना है तो मर कर नहीं जी कर देना चाहिए, वही नारी का अस्तित्व है।

महरुख एक समझदार युवती है, चाहे जिन्दगी के बारे में हो या मुहब्बत के बारे में, उसमें दृढ़ संकल्पनायें हैं। उसकी राय में– "मुहब्बत देने से मुहब्बत बढती है और नफ़रत देने से नफ़रत। इन्सान की पहचान उसके जज्बात होते हैं जो उसे जानवरों से अलग करते हैं। मगर उस जज्बात की रौ में इनसान का जानवर बन जाना किसी हालत में भी मुनासिब नहीं है।"[९५] अमृता और पति के बीच हलचल उत्पन्न हुई तो अमृता कहती है कि– "जो टूटा रहा है दीदी, उसे टूटने दो उसे जोड़ कर क्या मिलना है?" तब महरुख अमृता को समझाती हुई कहती है कि– रिश्ते जोड़ना बहुत आसान होता है, मगर रिश्ते को तोड़ना बहुत मुश्किल काम होता है। बाकी जिन्दगी को कभी–कभी वह पटरी से उतार कर रख देता है और कभी–कभी पटरी से उतरी जिन्दगी को दरें पर भी चला देता है। दोनों बातें हैं, मगर इस दो तरफे ख़तरे पर अच्छी तरह सोच कर फैसला लेना और अक्ल से काम लेना। दिल को बीच में मत लाना, यहाँ पर तुम्हारे दोनों बच्चों का भी सवाल अहम है। यहाँ महरुख प्रतिकूल परिस्थिति में अपने को संभालकर आगे बनाने की सीख देती है।

लेकिन पुराने ख्यालों की उसकी अम्मा को ऐसा लगता है कि शादी–ब्याह और घर गृहस्थी के बिना महरुख की जिन्दगी व्यर्थ और अधूरी है। महरुख की सूनी जिन्दगी को देखकर माँ बेचैन होती है तो वह अपने आप सवाल उठाती है कि "औरतों की खुशकिस्मती और बदकिस्मती के कितने बंधे–बंधाए ढर्रे हैं। बरसों से चली आ रही यह सोच कब बदलेगी? कब औरत की कीमत ठीकरों और कौड़ियों से नापना बन्द होगा? कब उसे इन्सान समझ कर उसकी बोलियाँ लगनी बन्द होंगी? कब उसे मर्द के सहारे के बिना दुनिया जीते देखना पसन्द करेगी? कब उसे अपनी तरह जीने की आजादी मिलेगी? आखिर कब ?"[९६] महरुख अपनी पसन्द की जिन्दगी जीना चाहती है। वह अपनी अम्मा को अधिक समझाती हुई कहती है कि "तो मैं ने भी अपनी पसन्द की जिन्दगी जीने की कीमत अदा की है, में अपनी ज़िन्दगी से मुतमईन हूँ। मैंने कुछ खोकर पाया है अम्मी! आप इसे न जान सकें तो वह अलग बात है, मगर मैंने सचमुच हादसों से घिर कर, तजुर्बों की सुरंगों से निकल कर कुछ पाया है जो बहुत कीमती, बहुत पुरमायनी है जो आप नहीं मगर आने वाली नस्लों की औरतें समझेंगी कि उसका सफ़र कब से शुरू हुआ था और वह औरत भावनात्मक धरातल पर हमसे ज्यादा मजबूत होगी, हर चोट को, हर चित्कन को गहराई से समझ कर उसे रचनात्मक मोड़ देना हमसे कहीं ज्यादा ज़रूरी समझेगी।"[९७] आखिर महरुख ने क्या पाया है? स्त्री होकर अपनी पसंद की जिन्दगी जीने का अधिकार, अपने बारे में स्वयं फैसला लेने का अधिकार, अपना एक इन्सानी व्यक्तित्व। अपनी एक पृथक पहचान! अपनी आत्मनिर्भरता और स्वाधीनता! आनेवाली, नस्लों की औरतों की अस्मिता के लिए ये ही तो ज़रूरी हैं।

स्त्री पर अधिकार जताने के पुरुष के भाव तथा उसके सामने स्त्री के निरंतर समर्पण के भाव के कारण ही स्त्री को सदैव घुट–घुट कर जीना पड़ता है। यह मर्दों की दुनिया है। वह सफेद करें या स्याह, उनसे कौन पूछ सकता है? पुरुष के सौ अपराध माफ किए जाते हैं और स्त्री का एक भी नहीं। स्त्री–पुरुष के अधिकार और स्वातंत्र्य की विषमता या असमानता बड़ी विडम्बनापूर्ण रही है। महरुख के साथ रफत की प्रवृत्ति देखकर दुखी ताई का कथन है– "मर्द सौ गलती करें तो उन्हें माफी, औरत एक करे तो उस के लिए पिस्तौल तैयार है। कभी सुना है कोई मर्द औरत के नाम पर बैठा हो, मगर औरत एक मर्द के नाम पर ज़िन्दगी तज देती है। सारी जिन्दगी उसी के नाम की माला जपती रहती है। ज़माना कभी नहीं बदलेगा। औरत मर–मर कर जिएगी, चुप रह–रह कर सकेगी।"[९८] यह औरत की नियति है। यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी के अलावा दूसरी स्त्री से संबन्ध रखें तो पुरुष के लिए कोई नाम नहीं रखा गया है, लेकिन नारी ऐसी गलत करें तो उसे वेश्या कहलाती है।

नासिराजी मर्द और औरत को खांचों में बांटकर किसी एक वर्ग विशेष का समर्थन करने के विरुद्ध है क्योंकि वे यह मानकर चलती हैं कि मर्द व औरत एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जिनके सहयोग से ही बेहतर समाज व परिवार की संरचना संभव है। स्त्री स्वतंत्रता के बारे में नासिराजी कहती हैं कि – "औरत इन्सान की तरह इनसानियत और अस्मिता के साथ जी सके तो वही उसकी स्वतन्त्रता होगी। मसलन उसे औरत होने की प्रताड़ना न सहनी पड़े, उसकी इच्छाओं और गुणों को देखते हुए घर के परिवेश के अनुसार उसे वह सब कुछ मिले जो एक नागरिक का अधिकार होता है और दूसरा पक्ष जो संवेदना से जुड़ा हुआ है, वह हर औरत के जीवन से निकलता है। उसकी संवेदनात्मक सुरक्षा की गारंटी कोई कानून, कोई समर्थक गुट नहीं ले सकता। जरूरी तो यह है कि औरत को स्वावलंबन की तरह शिक्षा और मर्जी के मुताबिक शादी रचाने का अधिकार मिले। जिस दिन ऐसा होगा, औरत का शोषण, उसकी संवेदनाओं के कुचले जाने की संभावना कम से कमतर होती जाएगी।"[९९]

भारतीय समाज में विशेषकर हिन्दू शास्त्र में नारी को सदा पुरुष के आश्रित बताया गया है। विवाह के पूर्व उसे पिता का संरक्षण, विवाहित जीवन में पति का संरक्षण प्रा।त होता है। बुढापे में वह पुत्र के आश्रय में रहती है। यहाँ नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व की कोई संभावना नहीं जन्म से लेकर मृत्यु तक वह पिता, पति या पुत्र की आश्रिता रहती है लेकिन 'ठीकरे की मंगनी' की महरुख के द्वारा नासिराजी इस तथ्य को अत्यधिक जोर–शोर के साथ रेखांकित करती हैं कि स्त्री अपने पिता की सम्पत्ति में भी हिस्सा नहीं लेती, भाई की मदद भी नहीं लेती बल्कि अपने द्वारा कमाई गयी राशी से ही उसे अपना घर बनाना चाहिए। माँ–बाप तथा अन्य बुजुगों की मृत्यु के पश्चात् महरुख फिर उसी गाँव में वापस चली जाती है जहाँ वह पिछले कई साल रहती थी। उस समय घर के बन्धु बान्धवों को बहुत दुख होने लगा और वे महरुख को आगे न जाने की अपेक्षा रखते हैं। तब महरुख कहती है कि – "एक घर औरत का अपना भी तो हो सकता है, जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग, उसकी मेहनत और पहचान को हो..... मेरा अपना घर वही पुराना है, जहाँ में पिछले तीस साल रही हूँ। तुम लोग अपने–अपने घर लौट रहे हो, मैं अपने घर लौट रही हूँ।"[१००] महरुख का यह निर्णय स्त्री अस्मिता की तना की पराकाष्ठा ही है। यहाँ नारी–मुक्ति की बँधी–बँधाई अभिव्यक्ति की लीक से ऊपर उठकर स्त्री के लिए तीसरे घर की विशिष्ट अवधारणा प्रस्तुत की गयी है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों के आधुनिक चेतना संपन्न नारी चरित्रों के अध्ययन से हम इस बात पर ध्यान देने को विवश होते हैं कि इन नारियों के स्वतन्त्र अस्तित्व की घोषणा पुरुष के विरुद्ध विद्रोह है या नहीं? महरूख अपनी जिंदगी के जरिये यह दिखाती है कि पुरुष के बिना नारी अकेला जी सकती है। यह हालत की मार से पैदा हुई लडकी महारूख की सौम्यतापूर्ण विद्रोह की कहानी है।

सन्दर्भ सूची

1. नासिर शर्मा दृ ठीकरे की मंगनी –पृ दृ ६७
2. नासिरा शर्मा दृ ठीकरे की मंगनी –ृ–१२७
3. नासिर शर्मा दृ ठीकरे की मंगनी –ृ–६२
4. नासिर शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ–११७
5. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –पृ दृ ११८
6. नासिरा शर्मा दृ ठीकरे की मंगनी –ृ– ११६
7. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ–१३१
8. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ–१८३
9. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १३१
10. नासिरा शर्मा दृ ठीकरे की मंगनी दृृ १३१
11. नासिर शर्मा –ठीकरे की मांगनी –ृ १३१
12. नासिर शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १२६
13. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १७६
14. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १८०
15. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १८१
16. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १६३
17. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १६४
18. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १३५
19. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ २०१
20. नासिरा शर्मा –ठीकरे की मंगनी –ृ १६७